

'द डार्कस्ट डेस्टिनी' : मानवीय संवेदनाओं का झुरमुट

¹ अकरम हुसैन

सारांश

यह एक समीक्षात्मक शोध पत्र है जिसमें डॉक्टर राजकुमारी लिखित उपन्यास 'द डार्कस्ट डेस्टिनी' द्वारा एक महिला किन्नर की मानवीय संवेदनाओं का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है। जिससे इस उपेक्षित, बहिष्कृत समाज के उत्थान में कुछ नई जानकारी भी जुड़ेगी और समाज भी उनको समानता का अधिकार देने के लिए जागरूक होगा। केंद्र और राज्य सरकारें भी उनके लिए नयी-नयी योजनाओं का शिलायन्त्र करेंगी। क्योंकि यह शत प्रतिशत सत्य है कि साहित्य में समाज और सरकारों को मोड़ने का सामर्थ्य होता है।

बीज शब्द : डार्कस्ट डेस्टिनी, तृतीय उभयलिंगी समाज

इस उपन्यास की चर्चा करने से पहले सर्वप्रथम इसके नाम पर दृष्टिपात करें तो, हिंदी साहित्य जगत में अंग्रेजी नाम से अनेक उपन्यासों का आविर्भाव हो चुका है जिसमें कोटि के रचनाकार भी इस अंग्रेजियत से स्वयं को परे ना रख सके। इस कारण कुछ रचनाकार और उनकी कृतियों का स्मरण करना भी समीचीन होगा जैसे - 'जिप्सी'- इलाचंद्र जोशी (1952), 'सीन 75' - राही मासूम रज़ा (1977), 'साईबर माँ' - मधु धवन (2004), 'रेड जोन' - विनोद कुमार (2015), 'नॉन रेसिडेंट बिहारी'- शशिकांत मिश्रा (2015), 'ज़ेड प्लस' - रामकुमार सिंह (2015), 'बनारस टाकीज़'- सत्य व्यास (2015), 'डार्क हॉर्स' - नीलोत्पल मृणाल (2016), 'रीफ़'- गणेश पाण्डेय (2016), 'नॉट इक्वल टू लव' - सूरज प्रकाश (2016), 'सर्कस' - संजीव (2018), 'अक्टूबर जंक्शन'- दिव्य प्रकाश दुबे (2019), 'हाफ मैन्'- भुवनेश्वर उपाध्याय (2020), 'ब्लाइंड स्ट्रीट'- प्रदीप सौरभ (2021) एवं 'द डार्कस्ट डेस्टिनी'- डॉ.राजकुमारी(2021) यह सभी हिंदी के ही उपन्यास हैं, लेकिन इनके नाम अंग्रेजी में दिए गए हैं। हो सकता है रचनाकार का ध्येय कृति को आकर्षित बनाने का हो, किसी भी हिंदी प्रेमी को यह प्रयोग अजीब लग सकता है क्योंकि हिंदी की शब्द संपदा अनंत है वहां पर अनेक बोलियों और भाषाओं को समान स्थान दिया गया है। यदि इन उपन्यासों का नामकरण हिंदी में ही होता तो शायद

¹ सहसंपादक - वाङ्मय पत्रिका अलीगढ़

इनकी प्रसिद्धि कम नहीं होती। पता नहीं रचनाकार की क्या मजबूरी रही थी जिस कारण उसने हिंदी भाषा में उपन्यास लिखकर नाम अंग्रेजी में दिया।

डॉक्टर राजकुमारी का उपन्यास 'द डार्कस्ट डेस्टिनी' मानवीय संवेदनाओं पर आधारित एक अनूठी कृति है जिसमें एक महिला किन्नर की कहानी है, जिसका नाम अमृता है। उसका जीवन हमेशा से संघर्ष कठिनाई और पितृसत्तात्मक समाज में अपने अस्तित्व को बचाने तथा खुद को इंसान की श्रेणी में रखने के लिए जद्दोजहद करता है। भारतीय समाज में मुख्यतया दो ही लिंग को माना जाता है स्त्री, पुरुष। लेकिन वैदिक वाङ्मय में तीन लिंग का वर्णन मिलता है स्त्रीलिंग, पुल्लिंग तथा नपुंस्क लिंग। वर्तमान में भारतीय साहित्य में भी इस तृतीय उभयलिंगी समाज की खूब चर्चा हो रही है उसका सबसे बड़ा कारण वाङ्मय, अनुसंधान हिन्दी त्रैमासिक पत्रिकाओं के कई विशेषांक हैं जिनके माध्यम से इस विमर्श को भी साहित्य जगत में स्थान मिल रहा है भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में शोध कार्य हो भी चुके हैं और उत्तरोत्तर हो रहे हैं। जिससे इस उपेक्षित, बहिष्कृत समाज के उत्थान में कुछ नई जानकारी भी जुड़ेगी और समाज भी उनको समानता का अधिकार देने के लिए जागरूक होगा। केंद्र और राज्य सरकारें भी उनके लिए नयी-नयी योजनाओं का शिलान्यास करेंगी, क्योंकि यह शत प्रतिशत सत्य है कि साहित्य में समाज और सरकारों को मोड़ने का सामर्थ्य होता है।

" उस दिन महसूस किया कि दुनिया केवल लिंग की कद्र करती है इंसान की नहीं। यदि मैं लड़की होती तो शायद वे तीनों दरिंदे हवालात में होते, लेकिन मैं ठहरी नपुंसकता की तख्ती गले में मंगलसूत्र की तरह टांगे एक हिजड़ा। और ये भी महसूस किया कि अगर अपने साथ दें तो दोषी भी सीना तानकर खड़ा हो सकता है और अगर अपने खिलाफ हो तो निर्दोष को भी दंडित किया जा सकता है" (पृष्ठ 86)।

उपर्युक्त अंश उपन्यास की नायिका अमृता का है जिसने अपने ऊपर हुई अभद्रता का वर्णन किया है, और समाज द्वारा लिंग की वजह से उसको प्रताड़ित किया जाता है। यह व्यवहार किन्नरों के प्रति समाज में आम हो चुका है। जिसको वो अपनी नियति समझते हैं और समाज उसको उनकी डेस्टिनी समझता है। किन्नरों की स्थिति समाज में प्रायः दयनीय, बहिष्कृत और उपेक्षित ही रही है इस असहनीय पीड़ा का प्रारम्भ हमेशा उक्त किन्नर के परिवार से ही होता है जब उस किन्नर बच्चे का जन्म होता है तब उसकी माता को सहना पड़ता है सबसे पहले परिवार के वरिष्ठ सदस्य फिर देवर, भाभी

उनके बच्चे से होते हुए घर के बाकी सदस्य जो परिवार में परोक्ष या अपरोक्ष प्रकार से शामिल हैं वो भी उस किन्नर की माता को हेय दृष्टि से देखते हैं। आखिर लिंग की वजह से इतना बखेड़ा शुरू हो जाता है जिसको कभी सभ्य समाज में बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है। और यह कुकृत्य संविधान सम्मत भी नहीं है। लेकिन समाज में अपनी जड़े फैला चुका है जिसका समूल नाश होना अनिवार्य प्रतीत होता है। क्योंकि मानवीय संवेदनाओं की रक्षा करना सामाजिक, राजनैतिक और नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में भी अति आवश्यक है। एक महिला किन्नर पर भी बलात्कार का प्रयास होता है तो समाज क्यों खामोश रहता है? यह प्रश्न विचारणीय है। न ही इस कुकर्म पर उसके परिवार का कोई सहयोग मिला और न ही इस तथाकथित समाज का जिसके कारण अमृता इस समाज को सेलेक्टिव भावनाओं वाला समझने लगी यदि किसी नॉर्मल लड़की के साथ यह हादसा होता तो क्या उसका परिवार, समाज और उसके ठेकेदार शांत बैठते यह प्रश्न अमृता के मन में सिहरन पैदा करते हैं जिसके कारण वह खामोश हो जाती है और समाज के इस रूप को भी समझ लेती है कि आखिर लोग कितना सेलेक्टिव सोच के हो चुके हैं उनकी भावनाएं भी उनके लाभ, महत्वाकांक्षाओं भी उसी के साथ विचरण करती हुई प्रतीत होती हैं।

वर्तमान समय में ऐसे अवसरवादी व्यक्तियों की भरमार है लेकिन समय उनको सही जवाब अवश्य देगा जब मानव हृदय में माननीय संवेदनाओं का प्रस्फुटन होगा। अमृता के साथ बलात्कार की घटनाएं कई बार हुईं और उसको इंसाफ नहीं मिला बल्कि उसको शांत करा दिया गया क्योंकि बचपन से ही ना ही पुरुष थी और ना ही स्त्री। उसका तो लिंग ही निर्धारित नहीं था। जिसकी सजा उसको बार-बार भुगतनी पड़ती थी। एक बार तो उसके सगे मामा ने उसके साथ बहसीपन किया जिसका उसने खुलेआम विरोध किया "वो मेरे पैरों के स्कर्ट वाले हिस्से को छूने का प्रयास करने लगे। उनके हाथ बेलगाम घोड़े की तरह मेरी जांघों पर दौड़ने लगे। मैंने अपने आप को बचाने का संघर्ष शुरू कर दिया। मैं खुद को बचाने के लिए खुद को उनसे छुड़ाने का प्रयास करने लगी 2 (पृष्ठ 104)।

इस प्रकार रिश्ते के सगे संबंधियों ने अमृता पर प्रताड़ना प्रारंभ कर दी थी क्योंकि उसका सीधा कारण था वो एक किन्नर स्त्री है। जिसका खामियाजा उसको अपनी अस्मिता गवा कर देना पड़ता था। अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही एक किन्नर स्त्री हमेशा लड़ती रहती है। भारत में चाइल्ड अबयूस की घटनाएं उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही हैं ऐसा करने वाले हमेशा सगे संबंधी ही होते हैं। जो मासूम बच्चों को अपने हवस का शिकार बना लेते हैं, जबकि बच्चों के

माता-पिता ऐसे सगे संबंधियों का बहुत विश्वास करते हैं, और उन पर सब कुछ निछावर करने का सपना भी देखते हैं लेकिन समाज के अंदर बढ़ती कामुकता इन रिश्तों को तार-तार कर देती है। जिसका खामियाजा बच्चों को भुगतना पड़ता है ठीक इसी प्रकार अमृता के साथ भी हुआ उसको कई बार उसके सगे मामा ने अपनी हवस का शिकार बना लिया। अमृता ने उसका पुरजोर विरोध भी दर्ज किया लेकिन एक स्त्री किन्नर होने के नाते वह संघर्ष करती हुई दिखाई देती है जबकि उसका मामा हष्ट पुष्ट होने के कारण उसको दबोच लेता है और उसके साथ अप्राकृतिक संबंध स्थापित करता है। इस प्रकार रचनाकार ने भी किन्नर स्त्री के संबंध में जो उनके संघर्ष को दर्शाया है समाज में आज भी व्याप्त है। जब अमृता स्वयं को बचाने का संघर्ष कर रही थी तो उसका मामा जोर जबरदस्ती कर रहा था जैसा कि अमृता ने बताया है " उन्होंने मुझे पीछे से अपनी मजबूत कलाईयों में जकड़ लिया और बोलने लगे, ' तुम्हारा क्या घिस जाएगा, जो इतना चिल्ला रही हो? तुम्हें तो मेरा शुक्रिया अदा करना चाहिए जो मैं तुम्हें इस लायक समझ रहा हूँ, तुम खुद को लड़की समझने के भ्रम से कब बाहर आओगी? तुम हो तो पुरुष ही न? जब भी तुम्हें देखता हूँ जवानी बहक जाती है। तुम्हारे खूबसूरत, चेहरे उभरे अंगों को देख मन मचलने लगता है। नारी दिखती हो, पर हो तो हिजड़ा ही न, क्या फर्क पड़ेगा जो हम थोड़े मजे ले लेंगे? यह बात हम दोनों तक ही रहेगी। ' वो मेरे अंगों को वहशीपन से दबाने लगा और मैं दर्द से छटपटाने लगी। मैंने उस वहशी से खुद को स्वतंत्र कराने के संघर्ष में घर की सारी चीजें बिखेर दी। सोफे के कुशन, पलंग की चादर, स्टैंड पर लगी तस्वीरें और कांच के बर्तन"3 (पृष्ठ 105) इस प्रकार मामा ने अमृता के साथ संबंध बनाने के लिए बहुत प्रयास किए तथा अमृता ने खुद की रक्षा की और अपने शरीर पर जखमों के निशान ले लिए, लेकिन अपने साथ कोई अनहोनी घटना नहीं होने दी और उस कंस रूपी तथाकथित मामा को संदेश भी दिया कि दिखने में भले ही वह स्त्री किन्नर है लेकिन उसकी अस्मिता सर्वोपरि है। वह अपने इस अस्मिता से कभी भी समझौता नहीं कर सकती।

डॉक्टर राजकुमारी ने इस क्रम में यह बताने का प्रयत्न किया है कि अस्मिता सबकी समान ही होती है चाहे वह स्त्री हो पुरुष हो या फिर थर्ड जेंडर दर्द की सिहरन हर मनुष्य में समान ही होती है क्योंकि इसका संबंध मनुष्य की आत्मा से होता है, लिंग से नहीं। जिसकी आत्मा जीवित है वह किसी भी प्रकार का अन्याय, अत्याचार और बहिष्करण कदापि सहन नहीं करेगा और उसके विरुद्ध अपना प्रतिरोध दर्ज कराएगा। इसके संबंध में उपन्यास की नायिका अमृता जब

राजकोट जाती है तो वह बाबा भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा के पास खड़े होकर अपने दर्द को बताने का प्रयत्न करती है और शिकायत करती है कि आखिर बाबा आपने हमें अपने अधिकार क्यों नहीं दिए जबकि स्त्री और पुरुष को दिए हैं इस पीड़ा को बताते हुए वह रोने लगती है और सामाजिक न्याय की बात करती है यद्यपि भारतीय संविधान में सामाजिक न्याय का अधिकार हर किसी नागरिक को दिया गया है लेकिन कुछ समाज में पितृसत्तात्मक समाज की जड़ें इतनी कठोर हो चुकी हैं उनको कतरने के लिए समाज के सभी अंगों को मिलकर प्रयास करना होगा जिससे भविष्य में कुछ शुभ परिणाम आने के संकेत मिल सकते हैं। अमृता बाबा भीमराव अंबेडकर से शिकायत करते हुए अपनी पीड़ा का बखान करती है " अरे ! ये तो वही हैं जिसे भारत का भाग्य विधाता कहते हैं, गरीब, मजदूर और दलितों का मसीहा कहा जाता है। ये तो डॉक्टर भीमराव अंबेडकर हैं; मैंने स्कूल की पाठ्य पुस्तकों में उनके बारे में पढ़ा था। मैंने उस प्रतिमा को ऊपर से नीचे तक देखना शुरू किया, प्रतिमा के नीचे स्थानों पर कार्य पत्थर पर उनका बड़ा सा नाम और जीवन संघर्ष लिखा हुआ था। जिस पर अब तक मेरा ध्यान नहीं गया था, उस पत्थर पर लिखा था, ' गरीब, मजदूर, शोषितों, पिछड़ों एवं दलितों के मसीहा' ये बात सत्य भी है कि उन्होंने तो सब लोगों के अधिकारों के लिए काम किया और समाज में उन्हें समानता और सम्मान दिलाने का प्रयास किया लेकिन मैं उनसे सहमत नहीं हुई। मेरे मन में एक गुबार था जिसे मैं निकालना चाहती थी और मैं उनके सामने निडरता से खड़ी हो गई और हृदय में दबे कुंठाओं के उस गुबार को निकालने लगी जो अंदर ही अंदर मुझे खाए जा रहा था 4 (पृष्ठ 108) अमृता ने इन पंक्तियों के माध्यम से अपनी बात को किसी परमात्मा से ना कह कर दलितों, मजदूरों, किसानों, शोषित, वंचितों एवं हाशियकृत समाज के अगुआ रहे महामानव बाबा भीमराव अंबेडकर से अपने याचना कही है। क्योंकि अमृता जानती है कि उसको न्याय भारत के संविधान से ही मिल सकता है और उस संविधान के रचयिता बाबा भीमराव अंबेडकर हैं। जिन्होंने इस समाज में दबे कुचले, दलित समाज का उद्धार किया है और उनको सवर्णों के सम्मुख सीना तानकर खड़ा होने का साहस प्रदान किया है। इसी उम्मीद से अमृता भी बाबा भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा के सामने खुद को नतमस्तक करते हुए अपनी बात रखती है। क्योंकि उसकी आशाएं बाबा भीमराव अंबेडकर पर टिकी हुई हैं और उसको ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान में नहीं तो भविष्य में सही उसका उद्धार संविधान के माध्यम से ही होगा। कुछ समय बाद उसी प्रतिमा के करीब बैठकर एक किन्नर टोली ने उसे देख लिया उसे देख कर उनमें कुछ अपनापन महसूस हुआ। इसी अपनेपन के कारण बड़े शहर

में तन्हा बैठी किन्नर लड़की को सिर छुपाने के लिए एक छत चाहिए थी वो उसको रानी मां के मठ में मिल गयी। प्रारंभ से अमृता पढ़ाई में होशियार थी और उसके संस्कार भी बाबा भीमराव अंबेडकर के रूहानी सानिध्य में मिले थे। वह बाबा के सिद्धांत और उनकी शिक्षाओं को अच्छे से समझती थी उस प्रतिमा के पास बैठकर उसको अपने अधिकारों का ज्ञान हो चुका था। इसलिए उस उभयलिंगी अमृता ने शिक्षा का माध्यम पकड़ने में रुचि दिखाई, क्योंकि वो मठ में किन्नरों का जीवन व्यतीत भी कर चुकी थी, और उसका अनुभव भी ले चुकी थी। उसको वहां पर कुढ़न सी महसूस होती थी। मठ में किन्नरों का वही परंपरागत जीवन फलक था जिसको वो भली-भांति जान चुकी थी और उस नरक से स्वयं को और अपने समाज को निकालने की जुगत में लग गई।

जहां पर उसको शिक्षा ही अहम हथियार दिखाई दिया जिसके माध्यम से वह अपने समाज और देश को बदलने के लिए निकल पड़ी और अपनी इच्छा मठ की गुरु रानी मां को बता दिया। रानी मां ने बहुत उसको सोच-विचार करके पढ़ने के लिए भेजा और उसके साथ दूसरी किन्नर बहन को साथ कर दिया जिससे उसको कॉलेज में प्रवेश लेने में किसी कठिनाई का सामना ना करना पड़े। जैसा कि विदित है 'मुझे पढ़ना है रानी मां! मुझे किसी कॉलेज में दाखिला लेना है'। बस ! इतनी सी बात?' उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखा फिर नोटों की गड़ड़ी सुगनाबाई को थमाते हुए मेरा दाखिला कॉलेज में कराने का बोल दिया 5 (पृष्ठ 137)। इस प्रकार रानी मां ने स्थिति को भाँपते हुए अमृता को शिक्षा का दान दे दिया क्योंकि रानी मां समझ चुकी थी यह लड़की विद्रोह कर देगी और वैसे भी शिक्षा पाने के लिए ही तो संघर्ष कर रही है यदि शिक्षा में प्रवीण हो जाएगी तो निश्चित ही किन्नर समाज की भलाई के लिए प्रयास करेगी जिस प्रकार से हम समाज में नरकिय जीवन व्यतीत करने में लगे हैं भविष्य में हमारी भावी पीढ़ियों को भी इस दुख से ना गुजरना पड़े। यदि कोई किन्नर पढ़ लिखकर अच्छा जीवन व्यतीत करेगा तो निश्चित ही वो आने वाली पीढ़ियों के लिए रोल मॉडल का कार्य करेगा। इन्हीं सब आशाओं के मद्देनजर रानी माँ ने उसकी सुरक्षा तथा रहने की व्यवस्था हॉस्टल में ना करके बल्कि पीजी रूम में स्थान दिलाया। जिससे उसको किसी भी प्रकार की लिंगभेदी घटनाओं का सामना ना करना पड़े और वह अच्छे से अपने शिक्षा को सुचारू रूप से आगे बढ़ा सके।

अमृता कॉलेज में प्रवेश लेने के बाद अपने पढ़ाई लिखाई में संलग्न हो गई। अमृता इतनी अंदर से मजबूत थी कि उसने कॉलेज के फॉर्म में अपने लिंग को नहीं छुपाया बल्कि खुलेआम लिंग वाले कोष्ठक में ट्रांसजेंडर लिख

दिया। कॉलेज के मित्र और छात्र नेता रहे अनुराग ने अमृता से नज़दीकियां बढ़ा ली। क्योंकि अनुराग ने प्रवेश के समय अमृता की बहुत मदद की थी इसलिए अमृता उसके एहसान का बदला चुकाना चाहती थी। कॉलेज में स्टूडेंट यूनियन का चुनाव हुआ तो अमृता ने तन मन धन से अनुराग का साथ दिया। अनुराग भी उसको खूब सम्मान देता था और उसके अधिकारों के लिए प्रयत्नशील था। वह अपनी छात्र राजनीति के माध्यम से दबे-कुचले, बहिष्कृत लोगों को उनके मौलिक अधिकार दिलाने के लिए प्रयासरत था। इसी के मद्देनजर कॉलेज की बहुत सी लड़कियां अनुराग से प्रेम करती थी लेकिन अनुराग किसी को भाव नहीं देता था उसका अंदरूनी बंधन अमृता से मजबूत होता गया और वह अक्सर अमृता के साथ घूमता हुआ मिल जाता था कई बार साथी सहपाठियों ने भी उस पर फ़ितियाँ कसी लेकिन कई बार अनुराग और अमृता ने खून के घूंट पी लिए और उनको पलट कर जवाब नहीं दिया यद्यपि अनुराग एक रौबदार छात्र नेता था। जो चाहता तो उनको अपनी बलिष्ठता से जवाब दे सकता था लेकिन उसने अपनी सामर्थ्य को बचा कर रखा और हमेशा अमृता को तरजीह दी जिससे उनके सम्मुख प्यार और गहरा हो गया। अक्सर अनुराग अमृता से एक ही बात कहता था 'तुम बहुत खूबसूरत हो! बहुत ही खूबसूरत, बिल्कुल ख्वाबों की ताबीर थी' 6 (पृष्ठ 158)।

इस प्रकार मित्र अनुराग अमूमन अमृता से अपने प्रेम का इजहार करता था और अमृता धीरे से मुस्कुरा देती थी तथा कुछ भी टीका टिप्पणी नहीं करती थी क्योंकि वह जानती थी वह आधे शरीर से स्त्री है और आधे शरीर से पुरुष अर्थात् उसको अर्धनारीश्वर के सामान ही देखा जा सकता है। इन्हीं सब कारणों के बीच अमृता अनुराग से स्वयं दूर हो गई और अनुराग भी स्कॉटलैंड चला गया कुछ समय बाद वहां से अपनी प्रेमिका के साथ भारत आ गया लेकिन इस दरमियान अमृता उसकी राह देखती रही लेकिन उसका कुछ पता नहीं चला। स्कॉटलैंड जब अनुराग अपनी प्रेमिका के साथ भारत आया तो विवाह संस्कार की संबंध में पंडित से पूँछा तो पंडित ने बताया कि नैसी मांगलिक है उसके साथ किसी किन्नर को रखा जाएगा तो वह आमांगलिक हो जाएगी। इसके बाद अनुराग और उसकी मां ने निर्णय लिया यदि अमृता को नैसी के साथ रख दिया जाएगा तो निश्चित ही विवाह संस्कार के लायक बधु हो जाएगी इसी प्लानिंग तहत अनुराग अमृता के पास गया और उसको बताया कि मां उससे मिलना चाहती है और शादी के संबंध में बात करना चाहती है। यह सुनकर अमृता भाव विभोर हो गई और प्रसन्नचित्त मुद्रा में आसमान में उड़ने लगी जब अनुराग के साथ अमृता उसके घर गई तो अनुराग की मां ने अमृता को सारी बात बताई। जब अमृता को मालूम हुआ कि उसके

साथ शादी की बात ना करके नैसी का ग्रह दोष खत्म करने का कार्य करना है वह अपने मित्र अनुराग की खुशियों के खातिर खुद के सपनों को रौंदकर अनुराग को खुशियां उपहार स्वरूप देने में लग गई और अपनी मानवता का परिचय दिया। इस प्रकार पूरे उपन्यास में मानवीय संवेदनाओं का झुरमुट दिखाई पड़ता है किन्तु समाज कभी भी अपनी खुशियों के लिए नहीं वह तो सदा दूसरों की खुशियों में शामिल होता आया है, और सबको खुशियां ही खुशियां देता है ऐसा प्रकृति का नियम है जिसको अमृता स्वयं कहती है "मुझे तो प्रकृति का वरदान है कि मुझे खुश नहीं होना। मेरा तो जन्म ही दूसरों की खुशियों में शामिल होने के लिए हुआ है, फिर तुम तो मेरे अपने हो। तुमने मेरे लिए बहुत कुछ किया और सहा है। मुझे एक मौका कुदरत ने दिया है कि मैं भी तुम्हारे लिए कुछ करूं!" 7 (पृष्ठ 173)।

संदर्भ ग्रंथ

डॉ. राजकुमारी, द डार्कैस्ट डेस्टिनी, देवसाक्षी प्रकाशन हनुमानगढ़, राजस्थान संस्करण, 2021